पड़हा पंचायत शासन व्यवस्था

- मुख्य रूप से उरांव जनजाति में प्रचलित शासन व्यवस्था

उरांव

- झारखंड की दुसरी सबसे बड़ी जनजाति –18 प्रतिशत से अधिक
- कुडुख भाषा द्रविड़ परिवार
- दक्षिण भारत से भारत आए

पड़हा पंचायत शासन व्यवस्था

- इस व्यवस्था में शासन के दो स्तर होते है ।

1. ग्राम पंचायत – गांव स्तर पर
2. पड़हा पंचायत – पड़हा स्तर पर

नोट :– यह शासन व्यवस्था मुण्डाओं से मिलती है जुलती शासन व्यवस्था है ।

1. ग्राम पंचायत

- ग्राम पंचायत का कार्य – जनजातीय लोगों के विवादो ंका निपटारा, गांव मे पर्व त्योहार का आयोजन , गांव में आने वाली महामारी जैसे हैजा, चेचक से निपटना, पड़हा पंचायत के निर्णय का अनुपालन करना ।

- ग्राम पंचायत की शासन व्यवस्था में महतों , पाहन एवं भंडारी की मुख्य भूमिका

महतो

- ग्राम पंचायत का प्रमुख महतों कहलाता था।
- महतों को दी जाने वाली भूमि – महतवई
- महतों का पद वंशानुगत
- उत्तराधिकारी में ज्येष्ठता का सिद्धांत

पाहन

- गांव के पुजारी को पाहन कहते थे।
- पाहन का कार्यकाल – 3 वर्ष
- पाहन को दी जाने वाली भूमि – पहनई
- सरहुल के दिन नए पाहन को चुना जाता था ।
- यह पद हमेशा शादी शुदा व्यक्ति को मिलता है।
- बैगा– पाहन का सहयोगी , ग्रामीण देवता की पुजा कर उन्हे शांत करना ।

भंडारी

- संदेश या सुचना का आदान प्रदान करने वाला
- भंडारी को मिले खेत को भंडार गिरी भूमि कहते थे।

नोट – महतो एवं पाहन दोनो गांव की पंचायत व्यवस्था के केन्द्र बिन्दु हैं। अपने आप में अकेले–अकेला दोनो कुछ नही हैं। क्योंकि इनकी सारी शक्ति पंचायत में निहित है।

एक कहावत है – पाहन गांव बनाता है और महतो गांव चलाता है।

2. पड़हा पंचायत

- 9 से 12 गांवो का समूह
- पड़हा पंचायत का प्रमुख – पड़हा राजा
- राजा के अलावा दीवान, मंत्री , पैनभरा तथा कोटवार
- पड़हा राजा की दी गई भूमि मंझीयस भूमि
- पड़हा राजा पड़हा पंचायत के बैठको की अध्यक्षता करता है।
- दीवान राजा का सहायक होता है जबकि मंत्री राजा का परामर्शी होता है।
- कोटवार पड़हा पंचायत में सदेशों का आदान प्रदान करने वाला। जरूरत पड़ने पर दोषी को सजा का ऐलान भी करता है।
- पैनभरा – बैठकों में खाने–पीने की व्यवस्था करना

- पड़हा पंचायत एक अपीलीय न्यायालय की तरह कार्य करता है।
- मेले व त्योहार का आयोजन भी किया जाता है ।

नोट – रांची जिले का मुड़मा मेला , प्रत्येक पड़हा में पड़हा जतरा का आयोजन जिसमें नृत्य भी होता है ।

- पड़हा में महिलाओं के लिए जनी शिकार पर्व जो प्रत्येक 12 वर्ष पर किया जाता है।

नोट –

- उरांवो की पंचायत की बैठक में महिलाएं भी भाग लेती है।
- इनकी पंचायत मे ंकर लेने का प्रचलन नही है।

© Click on :- Career foundation

Website :-www.careerfoundation.org.in
Contact Us in- 7070802888